उन्नत तकनीक – जीवन की खुशहाली

मै **लहरी बाई** पत्नि देवकिशन जाट, उम्र 60 वर्ष, राजसमन्द जिले की रेलमगरा तहसील के मकनपुरा गांव की निवासी हूॅ। कभी स्कूल नही गई हूॅ ,निरक्षर हूॅ मगर अज्ञान और गंवार नही हूॅ । मेरे परिवार एक बेटा बहु , तीन पोतियां और एक पोता कुल 6 सदस्य है।

परियोजना में जुड़ने से पहले मेरे पास दो बीघा जमीन, एक कुआ, एक गाय और एक भैंस थी । खरीफ में मक्का और कपास तथा रबी में गेंहू की बुवाई करते थे जिससे सालाना 400 किलो गेंहूॅ और 300 किलो मक्का उत्पादन होता था । गाय–भैंस दो वर्ष में एक बार ब्याती थी जिससे औसतन एक से दो लीटर दूध मिल जाता था जो कि घर के काम ही आता था और हमारा जीवन निर्वाह चल रहा था, मेहनत खूब करते थे फिर भी बचत करने हेतु कुछ नही रहता था । अकाल की परिस्थिति में हमारे पास स्वअर्जित कमाई/बचत नही होने के कारण उधार लेकर घर का सामान व खाद–बीज खरीदना पड़ता था। ऐसी परिस्थिति में घर चलाना दुखदायी था ।

माह जुलाई 2013 में मेरे गांव में एक बैठक का आयोजन हुआ, पडौसी ने बताया कि खेती–बाडी के बारे में कोई जानकारी देने आने वाले है अतः मै उस बैठक में गई वहां बायफ संस्था और हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के अधिकारी उपस्थित थे । बैठक में फलदार पौधे व उन्नत कृषि हेतु अच्छी किस्म के खाद–बीज व पशुपालन व खेती की अच्छी तकनीक अपना कर किसानों की आय बढाने का प्रदर्शन हो रहा था और किसानों को योजना से जुडने हेतू विस्तृत जानकारी दी जा रही थी ।

विधवा महिला होने एवं मुझे मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के अवसर की आवश्यकता थी और सौभाग्य से मुझे मेरे पडोसी के माध्यम से यह अवसर मिला और मेरे परिवार के साथ इस योजना में माह जुलाई 2013 से जुड गई ।

परियोजना द्वारा खेतीबाडी के विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया तथा शैक्षणिक भ्रमण भी करवाया गया और महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय,उदयपुर में भी जानकारी एवम् तकनीक उपलब्ध कराई गई , जिससे मुझे कृषि क्षेत्र के नये आयामों पर कुछ नया करने की प्रेरणा मिली एवं उत्साहवर्धन हुआ। सभी गतिविधियो के क्रियान्वयन हेतु आर्थिक सहयोग हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड से मिला।

दो बीघा जमीन में 80 अमरुद के फलदार पौधे खड्डे खोदकर कर लगाये गये है, उन्नत किस्म की फसल के बीज भी लगाये । 2013–14 में एक बीघा में प्याज की बुआई की जिससे 4000 किलो प्याज का उत्पादन हुआ एवं उसे रु.15/– प्रति किलो की दर से विक्रय कर रु.60000/– की आमदनी हुई। अगले वर्ष अमरुद से भी उत्पादन प्रारंभ होने वाले है और मेरी आय दुगनी होने वाली है। मेरे पास नींबू के भी 15 पौधे है जिससे मुझे सालाना रु.15000/– की आय हो रही है जो पौधे खेत की मेड पर लगे हुए है। अतः मैने मेरी समुचित खेतीहर जमीन का उपयोग उत्पादन बढाने वाली फसलो की बुआई से प्रारंभ कर दिया है।

फलदार पौधों के बीच हराचारा (रजका) भी बोया जिससे मेरे पशुओं को 12 माह हराचारा मिलने लगा एवं दुग्ध उत्पादन भी सवंर्धित हुआ। वर्तमान में मेरे पास कुल 5 पशु हैं जिनमें से सदैव दो दुग्ध देने वाले रहते है चूँकि इस परियोजना से पशुओं को कृत्रिम गर्भाधान सेवाएँ निशुल्क दी जा रही हैं जिससे पशु प्रति वर्ष बिया रहे हैं एवं प्रति दिन 10 लीटर दुग्ध उत्पादन हो रहा है।

परियोजना द्वारा खेत में बूंद बूंद सिंचाई पद्धति की स्थापना की है और आज सभी फसल की सिंचाई इसी पद्धति द्वारा हो रही है एवं इसके बाद शेष पानी रह जाता है जो कि पूर्व में ग्रीष्म ऋतु में अनुपलब्ध होता था ।

वर्तमान में 60 × 40 फीट कुल 2400 वर्गफीट का पॉली हाउस भी है जिसमे शिमला मिर्च एवं टमाटर की खेती करती हूँ। प्रथम वर्ष में 2400 वर्गफीट के उत्पादन से रु. 24000/– कमाये थे । इस वर्ष भी शिमला मिर्च एवं टमाटर की खेती की है । यह पहल करने में मुझे उन्नत तकनीक की जानकारी एवं प्रायोगिक अनुभव के साथ कौशल्य प्राप्त हुआ है, जिस कारण मेरा आत्म विश्वास बढ़ा है । मैं कम जमीन से भी अधिक उत्पादन प्राप्त कर पाने में सक्षम हो चुकी हूँ ।

इतना ही नही इस वर्ष मैने अमरुद की वाडी में पौधों के बीच बूंद बूंद सिंचाई पद्धति एवं टमाटर की खेती भी की है जिसका उत्पादन अभी शुरु हो चुका है।

<u>परियोजना में जुडने के बाद लाभ :–</u>

- पूर्व में खेती से मेरी वार्षिक आय रू. 25000/– थी जो कि बढकर रू.125000/– रुपये हो चुकी है । किसी से ऋण की आवश्यकता नहीं रहती।
- वर्तमान में 80 अमरुद के फलदार पौधे है, जो इसी वर्ष 2014–15 में फलोत्पादन प्रारंभ करेंगे। प्रति पौधा लगभग 20 किलो अमरुद के फल संभावित हैं जो कि सभी पौधों से कुल 1600 किलो अनुमानित होगे। प्रति किलो रु.15/– की दर से रु.24000/– की अतिरिक्त आय होने की आशा है।
- उन्नत खेती एवं उससे हुई आमदनी से मेरा और मेरे बेटे बालु का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर काफी सुधर गया है ।
- बाहरी कृषक भी हमारे खेत एवं तकनीक देखने काफी तादाद में आ रहे है । फलस्वरूप मेरा उत्साहवर्धन होता है एवं मुझे निरन्तर प्रगति करने की प्रेरणा मिल रही है। वर्तमान में विभिन्न स्थानों के कुल 257 कृषक शैक्षणिक भ्रमण हेतु हमारे द्वारा अपनाई तकनीक को देखने आ चुके हैं एवं अन्य सरकारी अधिकारी, गैर सरकारी संस्था के अधिकारी, सी.एस.आर. के अधिकारी और अन्यत्र स्थानों से कुल 39 भ्रमण मेरे यहां सम्पादित की जा चुकी है जो कि मेरे लिए सहयोगी एवम् मार्गदर्शी रहा।

- कडी मेहनत एवं लगन के साथ नयी जानकारी प्राप्त कर आधुनिक तकनीक से खेती की जाए तो उपलब्ध संसाधनों से आय में दुगनी या तिगुनी वृद्धि की जा सकती है।
- अनेको उपलब्धियों पर प्रशंसा एवं पारितोषक भी मिला है जिसका परिणाम दिनांक 08.01.2015 को परियोजना के अंतर्गत कृषि एवम् पशुपालन क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धि हेतु माननीया मुख्यमंत्री श्रीमति वसुंधरा राजे सिंधिया, राजस्थान सरकार के कर कमलों द्वारा **उत्तम सखी** का पारितोषक प्राप्त हुआ है ।

किसान का विचारः–

व्यक्तिगत विकास का श्रेय परियोजना को देती हूँ, अब मै स्वयं के खर्च से आगे बढने का प्रयास कर रही हूँ। अब लगता है कि मैं एक प्रगतिशील किसान बन चुकी हूँ एवं आनंदित अनुभव कर रही हूँ । परियोजना का मुख्य उद्धेश्य उन्नत तकनीक द्वारा खेती एवं पशुपालन करना हैं जिसके फलस्वरूप मुझे अल्प समय में उत्पादन एवं आय में वृद्धि हुई है। मैं चाहती हूँ कि यह तकनीक परियोजना द्वारा अन्य क्षेत्रों में जहॉ कम भूमि एवं कम पानी वाले कृषक हो इसका लाभ ले सके एवं कृषकों का आय संवर्धन हो सके।

मै सदा आभारी रहूँगी हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड एवं बायफ रिडमा संस्था की, जिसके आर्थिक सहयोग और उन्नत तकनीकी ज्ञान एवं संसाधनों से मेरे एवं मेरे परिवार के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन हुआ है।

बायफ रिडमा परिवार का ह्रदयपूर्वक अभार व्यक्त करते है और आने वाले भविष्य में भी दोनो संस्थाओं से इसी तरह अपेक्षा रखते हैं।

लहरी बाई / देवकिशन जाट

गांव : मकनपुरिया

जहसील : रेलमगरा

जिला : राजसमन्द